



# समुदाय स्तर पर बहुआपदाओं से निपटने हेतु मार्गदर्शिका

(i wZr\$ kjH fJLi kL , oai qoK l h d\$hr)



# पृष्ठभूमि

१०% ग्रामीण पृष्ठभूमि वाला बिहार राज्य अपनी भू-जलवायुविक परिस्थितियों के चलते वहु आपदा प्रभावित राज्य के तौर पर जाना जाता है। अनेक छोटी-बड़ी नदियों के कारण जल सम्पदा से समृद्ध बिहार राज्य और बाढ़ दोनों एक-दूसरे के पर्याय हैं तो राज्य के दक्षिणी जिले सुखाड़ आपदा से प्रभावित होते हैं। सिसमिक जोन ४ व ५ में आने के कारण भूकम्प भी राज्य के लिए एक प्रमुख आपदा है। साथ ही अगलगी, शीतलहर, लू चलना, ठनका, नाव दुर्घटना, सड़क दुर्घटना आदि प्राकृतिक एवं मानवज नित आपदाओं के साथ-साथ राज्य विगत दो वर्षों से कोरोना महामारी से भी व्यापक रूप से प्रभावित हो रहा है। हाल के वर्षों में जलवायु परिवर्तन के कारण घटने वाली चरम मौसमी घटनाओं जैसे-भारी से भी भारी बारिश, निरन्तर बढ़ रहा तापमान व आर्द्रता के कारण इन आपदाओं की आवृत्ति एवं प्रवृत्ति में तेजी आयी है।

बाढ़ हो या सुखाड़, अगलगी की घटना हो अथवा भूकम्प अथवा कोई भी आपदा हो, समुदाय पर उसका प्रत्यक्ष असर पड़ता है और स्वाभाविक रूप से समुदाय ही सबसे पहले रिस्पान्स करता है। ऐसी स्थिति में समुदाय की आपदा पूर्व तैयारी जितनी अच्छी होगी, समुदाय वहु आपदाओं से निपटने हेतु विभिन्न क्षमताओं में जितना अधिक दक्ष होगा, आपदा से निपटने में उतना ही अधिक सक्षम होगा। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर समुदाय के लिए आपदा पूर्व, आपदा के दौरान एवं आपदा के बाद कुछ गतिविधियां निर्धारित की जा रही हैं, जिन्हें अपनाकर समुदाय आपदाओं से होने वाले नुकसान को कम से कम कर सकता है।

## सिसमिक जोन

4 o 5 eavkis ds  
dkj . k H~~o~~Ei H~~h~~  
j kT; dsfy, , d  
i z~~q~~k vki nk g~~g~~



बाढ़ हो या सुखाड़, अगली की घटना हो अथवा भूकम्प अथवा कोई भी आपदा हो, समुदाय पर उसका प्रत्यक्ष असर पड़ता है और स्वाभाविक रूप से समुदाय ही सबसे पहले रिस्पान्स करता है।

## उद्देश्य

बहु आपदाओं से निपटने हेतु समुदाय की क्षमता वृद्धि ही इस पुस्तिका का मुख्य उद्देश्य है। बिन्दुवार इसके उद्देश्य को निम्नवत् देखा जा सकता है –

- ➔ बहु आपदाओं के प्रति समुदाय को संवेदनशील बनाना।
- ➔ बहु आपदाओं से होने वाले नुकसान को कम करने की दिशा में पूर्व तैयारी, रिस्पान्स एवं पुनर्वापसी के अन्तर्गत गतिविधियों को अपनाने हेतु सक्षम होना।
- ➔ आपदाओं से निपटने हेतु योजनाबद्ध ढंग से तैयारी करना।

# राज्य में बहु आपदाएँ : एक परिदृश्य

- राज्य के 38 में से 28 जिले बाढ़ प्रवण क्षेत्र में आते हैं।
- राज्य के 28 बाढ़ प्रवण जिलों में से 15 अति बाढ़ प्रवण एवं 13 जिले बाढ़ प्रवण की श्रेणी में आते हैं।
- राज्य भूकम्प की दृष्टि से भी अति संवेदनशील है। राज्य के 10 जिले सिसमिक जोन-5, 22 जिले सिसमिक जोन-4 एवं शेष 6 जिले सिसमिक जोन 3 में आते हैं।
- दक्षिणी जिले स्थाई रूप से सूखे से प्रभावित हैं।
- राज्य के 27 जिलों में तेज लू और बवंडर की स्थितियां बनती हैं।
- राज्य के सभी जिलों के गाँव अगलगी आपदा से प्रभावित होते हैं। ध्यान देने योग्य है कि वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बिहार राज्य में फूस के मकान 66,94,894, पालीथीन के मकानों की संख्या 1,07,049 तथा खपरैल मकानों की संख्या 37,87,703 हैं।



## Bihar's exposure to natural hazards



28 districts out of 38 are flood-prone areas.



7 districts lie in seismic zone V and 21 lie in a seismic zone IV, areas highly prone to earthquakes.



The southern districts of Bihar are affected by chronic drought.

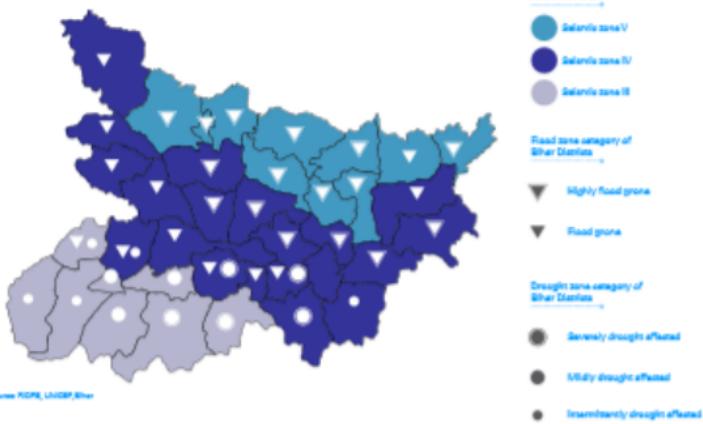


27 districts experience high winds and tornadoes.



Villages across all districts are prone to fire hazards.

Multi-hazard Profile of Bihar State



राज्य के

38 में से 28

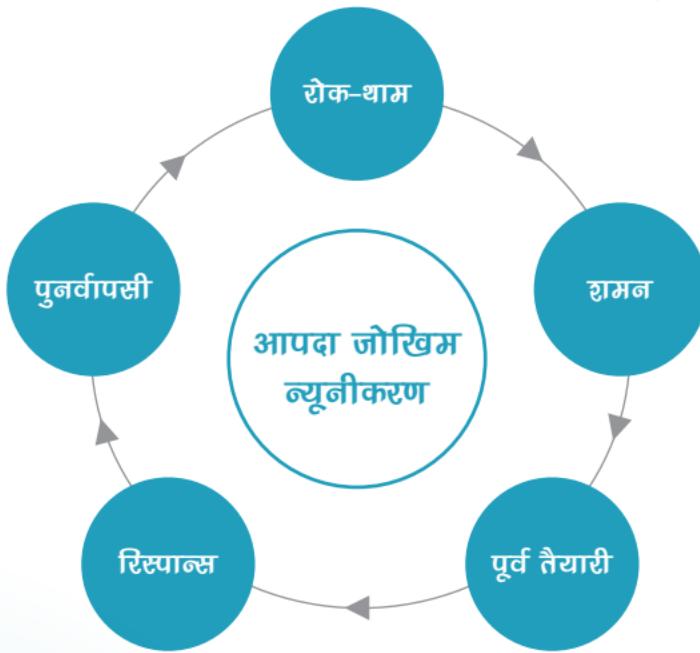
जिले बाढ़ प्रवण क्षेत्र में आते हैं।



# प्रभावों को कम करने की दिशा में समुदाय द्वारा किये जाने वाले प्रयास/गतिविधियाँ

आपदाओं से निपटने की दिशा में समुदाय द्वारा भी कुछ प्रयास किये जाते रहे हैं। चूँकि किसी भी आपदा से निपटने हेतु समुदाय ही प्रथम रिस्पाण्डर होता है। अतः आपदा से निपटने हेतु उसकी तैयारी व दक्षता होनी आवश्यक है। यहां कुछ ऐसी ही गतिविधियों को चिह्नित किया जा रहा है, जो कुछ तो पीढ़ियों से हस्तान्तरित होती हैं और कुछ सरकार द्वारा समय—समय पर पाँच—निर्देशित भी किया जाता है।

आपदा जोखिम न्यूनीकरण आपदा के प्रभावों को कम करने की दिशा में मुख्य तौर पर आपदा प्रबन्धन के पाँच तत्वों के अन्तर्गत गतिविधियों का निर्धारण किया जाता है। ये पाँच तत्व निम्नवत् हैं—



यहां पर सिर्फ पूर्व तैयारी, रिस्पान्स एवं पुनर्वापसी के ऊपर ही केन्द्रित किया जायेगा, क्योंकि आपदा जोखिम न्यूनीकरण के अन्तर्गत इन तीनों तत्वों के लिए समुदाय ही प्रथम व प्रमुख हितभागी होता है और वह अपने स्तर पर इन्हें अपनाकर बहु आपदाओं से बचाव की दिशा में अग्रसर हो सकता है—



# बाढ़

## पूर्व तैयारी (Preparedness)

- बाढ़ आने की स्थिति में गांव में अथवा गांव के आस-पास स्थित गढ़ों/तालाबों के किनारे बांस लकड़ी की बलियां लगा दें। ताकि ओवरफ्लो हो जाने की स्थिति में उसकी पहचान हो सके।
- त्वचा सम्बन्धी रोगों के लिए घरेलू उपचार जैसे— हाथ-पैरों पर सरसों के तेल की मालिश, नीम की पत्ती को उबाल कर फोड़े-फुन्सी वाले स्थान की धुलाई आदि के विषय में स्वयं जानकारी रखें एवं समुदाय के अन्य लोगों को भी बतायें।
- प्रत्येक व्यक्ति अपने पास कोरोना किट रखें और बाढ़ के कारण घर छोड़ने से पूर्व प्राथमिक चिकित्सा किट के साथ कोरोना किट भी अपने साथ लेकर निकलें, जिसमें निम्न वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित रहे—



**घर के प्रत्येक सदस्य हेतु मास्क**



**साबुन**



**सैनिटाइजर**

- मानसून ऋतु से पूर्व घर में कुछ घरेलू दवाओं जैसे— ओआरएस० पैकेट, सर्दी, खांसी, बुखार की साधारण दवाईयां अवश्य रखें।
- बरसात के दिनों में छिड़काव करने हेतु ब्लीचिंग पाउडर व क्लोरीन टेबलेट की व्यवस्था पूर्व में ही कर लें।
- अपने गाँव में स्थित आँगनवाड़ी केन्द्र, केन्द्र की संचालिका व सहायिका का नाम, पता अवश्य रखें तथा केन्द्र का निश्चित पता जान लें।
- गाँव के निकट स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों के बारे में जानकारी रखें। साथ ही बाढ़ के समय वहाँ तक पहुँचने हेतु वैकल्पिक मार्ग की भी जानकारी रखें।
- परिवार की गर्भवती एवं धात्री महिला तथा 5 वर्ष से छोटे बच्चों का आँगनवाड़ी केन्द्र पर नामांकन सुनिश्चित करायें।
- विशेषकर सर्पदंश के उपचार की जानकारी अवश्य रखें। क्योंकि बाढ़ के दौरान सर्पदंश की घटनाओं का जोखिम बढ़ जाता है।
- अपने बच्चों को प्रत्येक शनिवार को आयोजित होने वाले सुरक्षित शनिवार कार्यक्रम में अवश्य प्रतिभाग करायें ताकि बच्चे बाढ़ आपदा पूर्व तैयारी के विषय में जागरूक हो सकें।
- बाढ़ आपदा से बचाव हेतु बच्चों को तैराकी का अभ्यास करायें।
- उन्हें स्वयं अथवा किसी अन्य के डूबने की स्थिति में बचाव के अभ्यासों का नियमित अभ्यास करायें।
- विद्यालय प्रबन्धन समिति की बैठकों में सक्रिय सहभागिता निभायें।
- बच्चों की पाठ्य सामग्री को सुरक्षित स्थानों पर रखें।

- छोटे बच्चों को समय से पोषण मिल सके, इसलिए उनका नामांकन आँगनवाड़ी केन्द्र पर अवश्य करायें।
- विद्यालयों में चलने वाले मिड-डे मील की निगरानी करें। देखें कि प्रत्येक दिन दिये गये मीनू के हिसाब से भोजन बन रहा है अथवा नहीं। यदि नहीं बन रहा है, तो इस हेतु प्रधानाध्यापक एवं अन्य सम्बन्धित पदाधिकारियों से सम्पर्क स्थापित करें।
- उन स्थलों की पहचान करें, जहाँ बाढ़ के दौरान जल-जमाव 6 फीट से अधिक होता है ताकि बाढ़ के दौरान बच्चे ऊंधर न जा पायें।
- इसी प्रकार उन स्थलों की भी पहचान कर लें, जहाँ पर पानी का बहाव तेज रहता है।
- ऐसे पुलों व पुलियों की पहचान कर लें, जहाँ पर पानी का बहाव तेज होता है और वहाँ पर पानी भी अधिक रहता है।
- इन सभी चिह्नित स्थलों पर मानसून पूर्व खतरा का चिन्ह लगा दें।
- बाढ़ आपदा के दौरान आश्रय लेने हेतु सुरक्षित एवं ऊँचे स्थलों का पता लगा लें ताकि आवश्यकता पड़ने पर वहाँ जाया जा सके।
- आपदा के दौरान विशेषकर बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक बच्चे को अपना नाम एवं पता याद करायें।
- प्रत्येक बच्चे का परिचय पर्ची तैयार कर उसे ताबीज में डालकर बच्चे के गले में पहनायें।
- स्वयं भी मास्क पहने एवं बच्चों को भी पहना कर रखें।
- आपदा के दौरान अपने—आप को सुरक्षित रखने के उपायों पर महिलाओं एवं बच्चों को जागरूक करें।

- स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार बाढ़ प्रतिरोधी फसलों/प्रजातियों को लगायें।
- जल-जमाव वाले क्षेत्रों में जलस्नेही फसलों जैसे –सिंघाड़ा, तालमखाना, तिन्नी, करमुआ आदि की खेती करें।
- जल-जमाव क्षेत्र में लतावर्गीय सब्जियों की खेती को बढ़ावा देने हेतु जूट बैग के साथ मचान खेती तकनीक को अपनायें।
- बाढ़ व जल-जमाव क्षेत्रों में जल सहनशील पौधों/वृक्षों/बागवानी/प्रजातियों जैसे– जामुन, अमरुद, अर्जुन, भगनहां, बांस रोपण से सम्बन्धित योजनाओं से जुड़ाव स्थापित करें।
- विशेषकर बंटाईदार किसान “बिहार संकटग्रस्त किसान सहायता योजना 2015” से अपना जुड़ाव सुनिश्चित करें। (शासनादेश संख्या 01/गै0प्रा0आ0 –01/2015/1946/आ0प्र0 पटना–15 दिनांक 22/5/15)
- कृषि विभाग द्वारा समय–समय पर आयोजित किये जाने वाले कृषि मेला, कृषि प्रदर्शनी, गोष्ठी, क्षमतावर्धन हेतु प्रशिक्षण आदि में सक्रिय सहभागिता करें।
- बिहार राज्य सरकार की “शताब्दी अन्न कलश योजना” से जुड़ाव सुनिश्चित कर खाद व बीज प्राप्त करें।
- जल जमाव की स्थिति बनी रहने पर छत या उच्चीकृत नर्सरी अथवा फ्लोटिंग नर्सरी के माध्यम से आय संवर्धन करें और इस हेतु कृषि विभाग व कृषि विज्ञान केन्द्र से अपना जुड़ाव सुनिश्चित करें।
- कृषक स्वावलंबन एवं आजीविका सम्वर्धन हेतु सरकार द्वारा संचालित गतिविधियों–बीज उत्पादन, जैविक खाद उत्पादन, नर्सरी उत्पादन आदि से जुड़ाव सुनिश्चित करें।

- सरकार की किसान बीमा योजना तथा किसान क्रेडिट कार्ड से अपना जुड़ाव सुनिश्चित करें।
- स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल खेती करने हेतु कृषि विभाग, आत्मा, कृषि विज्ञान केन्द्र एवं अन्य स्थानीय संस्थानों से जुड़ाव सुनिश्चित करें।
- पशुओं को खुरपका—मुंहपका रोग से बचाने हेतु बाढ़ पूर्व ही पशुओं का टीकाकरण सुनिष्चित करें।
- घरों की नींव ऊँची करें।
- घरों में परछत्ती अवश्य बनवायें।
- बाढ़ आपदा से पूर्व अपने कीमती सामान, दस्तावेज, राशनकार्ड, आधार कार्ड पैन कार्ड, बच्चों का टीककरण कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस को सुरक्षित स्थानों पर रखना सुनिष्चित करें।
- खाद्यान्न एवं पशुचारा का भण्डारण ऊँचे स्थलों पर मचान बनाकर करें ताकि बाढ़ आने की स्थिति में भी यह सुरक्षित रहे।
- आपदा की स्थिति में शरण लेने हेतु ऊँचे व सुरक्षित स्थलों का चयन कर लें। प्रयास करें कि इन स्थलों पर पीने के पानी आदि की व्यवस्था निकट ही हो।
- पहले से बने बाढ़ शरणालयों की साफ—सफाई एवं अन्य व्यवस्था पूर्व में ही कर लें।
- पशुओं हेतु ऊँचे स्थल का चयन कर लें। प्रयास करना चाहिए कि यह स्थान बाढ़ शरणालय के निकट ही हो।
- आपदा आने की स्थिति से निपटने हेतु एक सप्ताह का सूखा खाना ( लईया, चना, चिउरा, गुड़, सत्तू, नमक आदि ) को सुरक्षित रखने हेतु पूर्व में ही व्यवस्था कर लें।

- कुछ महत्वपूर्ण व आवश्यक वस्तुएं जैसे— महत्वपूर्ण औजार, रस्से, प्लास्टिक शीट, बांस पहनने हेतु कपड़ा, माचिस, मोमबत्ती आदि की व्यवस्था पूर्व में ही सुनिश्चित कर लें।
- आपदा के दौरान काम आने वाले कुछ महत्वपूर्ण फोन नम्बरों को सुरक्षित स्थान पर नोट कर लें।
- जिला आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण से जुड़ाव स्थापित कर आपदा प्रबन्धन के विभिन्न घटकों पर क्षमतावर्धन करें।
- गाँवें को सुरक्षित बनाने की दिशा में राज्य सरकार की महत्वपूर्ण गतिविधि ग्राम आपदा प्रबन्धन योजना निर्माण में सक्रिय सहभागिता निभायें।
- आपदा की स्थिति में सुरक्षित स्थानों तक पहुँचने हेतु वैकल्पिक मार्गों की जानकारी प्राप्त करें और रास्तों पर पहचान के चिन्ह लगायें।
- अपने घर में सेल सहित टार्च को अपनी सही-सलामत स्थिति में रखें ताकि आवश्यकता पड़ने पर उपयोग किया जा सके।



- बाहर से आयी टीम को स्थानीय जानकारियों एवं परिस्थितियों से अवगत कराये तथा खोज एवं बचाव कार्यों में उनका सहयोग करें।
- अफवाहों पर ध्यान न देने हेतु समुदाय को जागरूक करें।
- बाहर से टीम आने तक खोज एवं बचाव दल द्वारा लोगों को बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों से निकालकर सुरक्षित स्थानों पर पहुँचायें।
- प्राथमिकता के आधार पर महिलाओं, बीमार, वृद्ध एवं बच्चों, दिव्यांगों को प्रभावित स्थलों से निकालने में सहयोग करें।
- आपदा के दौरान घायल हुए लोगों को प्राथमिक उपचार प्रदान करें एवं आगे के उपचार हेतु स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों/सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों/चिकित्सा शिविरों पर पहुँचायें।
- नाव में पहले से निर्दिष्ट सवारियों की संख्या से ज्यादा लोगों को न बैठाया जाय ताकि सामजिक दूरी का पालन हो सके साथ ही यह सुनिश्चित करें कि सभी ने मास्क पहना हो।
- राहत शिविर में आने वाली प्रत्येक वस्तु को सैनिटाइज किये जाने के पश्चात ही उपयोग या वितरित किया जाना सुनिश्चित करें।
- शिविर में निरंतर कुछ वक्त के अंतराल पर स्वयं भी हाथ धुलें लोगों को भी हाथ धुलने हेतु प्रेरित करें एवं अपने सामानों से अन्य कोई भी वस्तु छू जाने पर हाथ को तुरन्त धुल लें।
- राहत शिविर में कचरे का सुरक्षित निपटान करना सुनिश्चित करें।
- छींकने और खांसने के दौरान अपना मुँह ढकें एवं यदि कोई खांस या छींक रहा हो तो उससे उचित दूरी बना कर रहें।

- राहत शिविर में जल एवं भोजन वितरण वाले स्थल, प्रवेश एवं निकासी द्वार, शौचालयों के समीप तथा लोगों के विश्रामस्थल पर भीड़ को बिलकुल भी एकत्रित न होने दें।
- राहत शिविर में कुछ व्यक्तियों/स्वयंसेवकों को लोगों के बीच में हर समय 6 फीट की सामाजिक दूरी को बनाये रखने की जिम्मेदारी सौंपना सुनिश्चित करें।
- राहत शिविर में शुद्ध पेयजल की व्यवस्था हेतु सम्बन्धित व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित करें।
- बाढ़ शरणालय पर खाना बनाने हेतु ईंधन की व्यवस्था सुनिश्चित करने का प्रयास करें।
- शरणस्थली पर साफ—सफाई का विशेष ध्यान रखें।
- महिलाओं, किशोरियों, किशोरों एवं बच्चों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दें।
- बाढ़ शरणालयों पर सुरक्षा की दृष्टि से लगी पुलिस एवं अन्य हितभागियों का सहयोग करें।
- घायलों के उपचार हेतु बाढ़ शरणालय पर लगने वाले चिकित्सा शिविरों के सफल संचालन में सहयोग करें।
- यह सुनिश्चित करें कि अफरा—तफरी का माहौल न बनने पाये।
- प्रधान के साथ मिलकर प्रभावितों की सूची बनायें।
- सूची के हिसाब से राहत वितरण में सहयोग करें। यह सुनिश्चित करें कि सभी लोगों को राहत मिल जाये।
- राहत वितरण के दौरान प्रभावित लोगों के मध्य 6 फीट की सामाजिक दूरी अवश्य सुनिश्चित करें।

## प्रतीक्षा परम्परा (Recovery)

- आँगनवाड़ी केंद्र, स्वस्थे केन्द्र, स्कूल एवं पंचायत भवन को प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र संचालित कराने में सहयोग करें।
- बाढ़ आपदा के बाद गाँवों में जमा गन्दगी के साफ—सफाई में सहयोग करें एवं पंचायत से सहयोग कर ब्लीचिंग पाउडर एवं चूना आदि का छिड़काव सुनिश्चित करें।
- गाँव में लगी मिटटी की गाद को खेत, नाली, सड़क एवं अन्य किसी भी जगह से शीघ्रता से साफ कराने में मदद करें।
- बाढ़ के दौरान अत्यधिक जाम हो गयी नालियों की पहचान कर उनकी मरम्मत एवं साफ—सफाई हेतु प्रधान एवं पंचायत से सम्पर्क स्थापित करें।
- हैंडपंपों एवं सार्वजनिक पेयजल सुविधाओं के कीटाणुशोधन और क्लोरीनेशन हेतु सम्बन्धितों से सम्पर्क स्थापित करें।





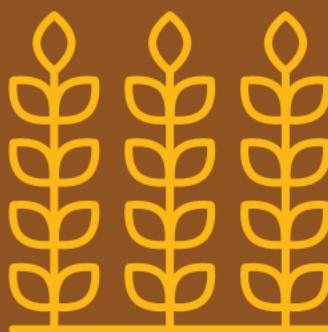
# सुरक्षाड

**पूर्व तैयारी** (Preparedness)

- पारम्परिक जल स्रोतों जैसे— तालाब आदि की साफ—सफाई व गहरीकरण करें ताकि जल संचयन होता रहे।
- खराब पड़े हैण्डपम्पों की मरम्मति सुनिश्चित कर लें।
- कम पानी चाहने वाली फसलों व सूखा सहनशील प्रजातियों की खेती करें।
- खेतों की ऊँची मेडबन्दी करें, जिससे खेत का पानी खेत में ही रहे और नमी बनी रहे।
- सिंचाई हेतु फौव्वारा विधि का उपयोग करें ताकि पानी का अधिकतम उपयोग हो सके।
- भूजलस्तर को नीचे जाने से रोकने के लिए वर्षा जल संग्रहण जैसी जल संचयन गतिविधियों को अपनायें।
- मौसम सम्बन्धी दी जाने वाली जानकारियों तक अपनी पहुँच बढ़ायें और उसी के अनुरूप सूखा आपदा से निपटने हेतु प्रयास करें।
- सूखा स्थितियों से निपटने हेतु समुदाय स्तर पर अनाज एवं चारा बैंक की स्थापना सुनिश्चित करें।
- यह सुनिश्चित करें कि बच्चे जल की बरबादी न करें। जितनी आवश्यक हो, उतने ही पानी का उपयोग करें।
- अत्यधिक सूखा की स्थितियों में पशुओं सहित आश्रय लेने हेतु जल की उपलब्धता वाले स्थलों की पूर्व में ही पहचान सुनिश्चित कर लें।



- अपने खेतों की मेड़ों पर एवं अन्य खाली स्थानों पर कम पानी में होने वाले वृक्षों का रोपण सुनिश्चित करें।



de i kuh  
plgus okyh  
Ql ykao l wkk  
l gu' khy  
i t kfr; kadh  
[ krh dj@

पानी की कमी वाले क्षेत्रों में

i kuh dh mi yC/krk  
l fuf' pr djus gsrq  
i pk r e[ k, k@  
i frfuf/k, kads l g; kx  
l s l EcfUkr foHkx l s  
l eUb; LFkkfir dj@



## प्रत्यक्षार [Response]

- अत्यधिक सूखा की स्थितियों में अपने पशुओं को लेकर जल की उपलब्धता वाले स्थानों पर जाना सुनिश्चित करें।
- अत्यधिक धूप होने से पहले ही खेती सम्बन्धी या बाहर वाले अन्य कार्य सम्पन्न कर लें।





# अगली

## पूर्व तैयारी (Preparedness)

- रसोई घर को यथासंभव अग्निरोधक बनाने के लिए उसके चारों तरफ गीली मिट्टी का लेप लगा दें। फूस के घरों में भी मिट्टी का लेप लगाएं।
- अपने घर के चारों तरफ हरे पेड़ जैसे— केला लगायें क्योंकि केला में अग्नि ताप को कम करने की क्षमता होती है।
- प्रयास करें कि चूल्हे को चारों तरफ से घेर कर रखें। इससे आग लगने की संभावना कम हो जाती है।
- रसोई घर की छत ऊँची रखें जिससे आग की लपटें वहाँ तक न पहुंच पायें।
- खाना बनाते समय बगल में एक बाल्टी में पानी भरकर अवश्य रखें।
- आग बुझाने के लिए घर में हमेशा एक बोरे में बालू या मिट्टी भरकर अवश्य रखें।
- रसोईघर में कोई भी ज्वलनशील पदार्थ जैसे मिट्टी का तेल, सिंथेटिक कपड़े आदि न रखें।
- विशेषकर फूस एवं खपरैल वाले घरों के लोग पछुआ हवा बहने की स्थिति में खाना सुबह 9 बजे से पहले बना लें।



**FIRE**

**आग**

**FIRE**

**आग**

- जहाँ तक संभव हो रात का खाना शाम को 6 बजे के बाद बनायें।
- जहाँ पर सामूहिक भोजन इत्यादि का कार्य हो रहा हो, वहाँ पर दो से तीन ड्रम पानी अवश्य रखना सुनिश्चित करें। सिलेण्डर को हमेशा सुरक्षित और सही पोजीशन में रखें।
- लीक कर रहे सिलेण्डर का इस्तेमाल कभी भी न करें।
- किसी भी ज्वलनशील पदार्थ, स्पार्क, लपट, पिघली धातु या गरम वस्तु को सिलेण्डर से दूर रखें।
- दो सिलेण्डरों को एक साथ सटाकर न रखें।
- बिना ढक्कन के सिलेण्डर को एक स्थान से दूसरे स्थान पर न ले जायें।
- रसोईघर की खिड़की के पर्दे को पीछे की तरफ कस कर बांध दें।
- शार्ट सर्किट की आग से बचने के लिए बिजली वायरिंग की समय पर मरम्मत करा लें।
- घर की वायरिंग कराते समय हमेशा आईएसआई / बीआईएस मार्का तार, स्विच एवं अन्य उपकरणों का प्रयोग करें।
- अपने घरों के ऊपर से हाईटेंशन तार न जाने दें। इसके लिए विद्युत विभाग से शिकायत करें।
- गाँव में लूज तार दिखने की स्थिति में उसकी सूचना तुरन्त बिजली विभाग को देकर मरम्मत कराना सुनिश्चित करें।
- बच्चों को आग से दूर रखें।



- किसी भी जलते पदार्थ को बुझा कर ही सोयें।
- ग्रामीण क्षेत्रों में हरा गेहूं, खेसारी, छिमी भी बच्चे लाकर भूनते हैं। ऐसे में आग लगने से बचने के लिए उनपर निगरानी रखें।
- घर के सभी लोगों को आग से बचाव सम्बन्धित प्राथमिक जानकारी अवश्य हो। उदाहरणस्वरूप, घर में या कमरे में धुंआं भर जाने पर जमीन पर लेट जायें। आग लग जाने की स्थिति में दौड़े नहीं, वरन् नीचे लेटकर लुढ़कें।
- घर में सभी लोगों को आग बुझाने हेतु आपातकालीन सेवा का फोन नं० 101 पता होना चाहिए।
- दीपावली में पटाखे जलाते समय पानी की बाल्टी तथा रेत की पर्याप्त व्यवस्था रखें।
- गाँव के स्कूलों में अगलगी से बचाव हेतु होने वाले पूर्वाभ्यासों में अपने बच्चों को अवश्य सहभागिता करायें।
- पूर्वाभ्यास के दौरान एकत्रित भीड़ के बीच 6 फीट की सामाजिक दूरी का अनुपालन सुनिश्चित करायें और यह भी सुनिश्चित करें कि सभी लोग मास्क पहने हों।
- कम से कम दो सुरक्षित मार्गों का पूर्व निर्धारण कर लें ताकि आग के दौरान इन मार्गों का प्रयोग किया जा सके।
- फूस के पशु बाड़ा की दीवारों पर मिट्टी का लेपन अवश्य करें।
- पशु बाड़ा का निकास द्वार चौड़ा रखें।
- यदि पशु बाड़ा में अधिक संख्या में पशु हैं तो दो से तीन निकास द्वार रखें।
- बिजली के कनेक्शन के लिए कम या खराब गुणवत्ता वाले तार का प्रयोग न करें।



## प्रत्यक्षात् [Response]

- यह भी निगरानी रखें कि कोई भी व्यक्ति खलिहान के आस पास बीड़ी, सिगरेट आदि न पीये।
- फसल अपशिष्टों को खेत में न जलाने दें।
- खलिहान में फसल रहने की स्थिति में हमेशा एक बड़े ड्रम (200 लीटर) में पानी भर कर रखें।
- जूट की चार-पाँच पुरानी बोरियों को पानी में भिगो कर रखें।
- रोशनी के लिए बैटरी वाले संयंत्र जैसे टार्च, इमरजेंसी लाईट आदि का ही प्रयोग करें और हमेशा इनकी व्यवस्था रखें।
- आग लग जाने की स्थिति में आग बुझाने हेतु जलस्रोतों को चिन्हित करके रखें एवं उतनी दूर से खलिहान तक के लिए सिंचाई पाइप और पम्पसेट हमेशा तैयार रखें।

- आग लगने पर समुदाय के सहयोग से आग बुझाने का प्रयास करें।
- शार्ट सर्किट से आग लगने के दौरान शान्त रहे, धैर्य रखें व बिजली के उपकरणों को बिजली के सम्पर्क से हटा दें।
- अनियंत्रित आग के दौरान पीड़ित व्यक्ति को कम्बल में लपेटें जब तक कि आग बुझ ना जाए। कम्बल न मिलने की स्थिति में टाट बोरे का भी प्रयोग कर सकते हैं।
- कमरे या घर में धुंआं भर जाने की स्थिति में तुरन्त घुटनों के बल बैठ जायें।
- शरीर में आग लग जाने की स्थिति में स्टाप-ड्राप-रोल की प्रक्रिया अपनायें।
- फायर ब्रिगेड (101 नम्बर) एवं प्रशासन को तुरंत सूचित करें एवं उन्हें सहयोग करें।

## प्रतीक्षा (Recovery)

- पूर्व चिन्हित सुरक्षित मार्गों का प्रयोग करते हुए आग वाले स्थल से भाग कर सुरक्षित स्थलों पर आश्रय लें।
- आपदा के दौरान घायलों को निकट स्थित
- प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तक पहुंचायें। इस दौरान फेस मास्क अवश्य लगाकर रखें।
- यद्यपि अगलगी आपदा इतनी त्वरित होती है कि इसमें इतना समय नहीं मिलता, फिर भी जहाँ तक संभव हो कोरोना वायरस से बचाव के उपायों को अवश्य अपनायें।





# भूकम्प

## पूर्व तैयारी (Preparedness)

- भूकम्प रोधी भवनों का निर्माण सुनिश्चित करने हेतु भवन संहिता में दिये गये नियमों का पालन करें।
- अपने घर में बिजली और पानी बन्द करने के मुख्य स्थानों के बारे में जानें ताकि भूकम्प आने की स्थिति में वहाँ से इनकी आपूर्ति बन्द की जा सके।
- भूकम्प आने के बाद आश्रय लेने हेतु सुरक्षित स्थल की पहचान कर लें।
- अपने आस-पास के चिकित्सा केन्द्रों, अग्निशमन केन्द्रों एवं पुलिस चौकियों के बारे में पर्याप्त जानकारी रखें ताकि आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता ली जा सके।
- भूकम्प से बचाव के उपायों— जैसे— “भूकम्प आने की स्थिति में किसी मेज या मजबूत फर्नीचर के नीचे बैठ कर उसके पाये को मजबूती से पकड़ कर रखें।” अगर घर में कोई मजबूत मेज या फर्नीचर नहीं है तो घुटने के बल मजबूत दीवार के साथ फर्श पर बैठ जायें और अपने दोनों हाथ जमीन पर रखें।” आदि का नियमित अभ्यास करते रहें।
- भारी या शीशे का सामान नीचे रखें।



“ भूकम्प आने की स्थिति में स्वयं भी शान्त रहें और दूसरों को भी दिलासा देते रहें ।

## प्रत्यक्ष (Response)

- भूकम्प आने की स्थिति में स्वयं भी शान्त रहें और दूसरों को भी दिलासा देते रहें ।
- अगर सम्भव हो तो घर से बाहर सुरक्षित खुले स्थानों पर चले जायें, जहाँ आस-पास ऊँची इमारतें, पेड़, पोल, तार आदि न हों ।
- यदि आप घर के अन्दर हैं तो सुरक्षित स्थान जैसे— मजबूत मेज या चौकी के नीचे कोना पकड़कर अथवा दीवार के सहारे फर्श पर बैठ जायें ।
- कांच के दरवाजे, खिड़कियों या बाहर के दरवाजों से दूर रहें ।
- भूकम्प के झटके आने तक जहाँ सुरक्षित स्थान पर हैं, वहीं रहें ।
- अगर आप चलती गाड़ी में हैं तो जितनी जल्दी हो, रुक जायें और गाड़ी में ही बैठे रहें ।
- सभी पालतू बंधे जानवरों को खोल दें ताकि वे बाहर खुले में भाग सकें ।
- तुरन्त सभी बल्ब, लालटेन, डिबरी, मोमबत्ती आदि को बुझा दें ।
- ज्वलनशील पदार्थों जैसे— माचिस, मोमबत्ती, मिट्टी का तेल, बिजली का स्विच आदि से दूर रहें ।

# एनवीपर्सी (Recovery)

- भयभीत न हों, शान्ति बनाये रखें, न तो स्वयं अफवाह फैलायें और न ही अफवाहों पर ध्यान दें।
- झटके के बाद की नवीनतम जानकारी प्राप्त करने के लिए अपने रेडियो या टीवी को ऑन करें।
- पुनः झटकों के लिए तैयार रहें, क्योंकि ये कभी भी आ सकते हैं।
- पानी के पाइप, बिजली के तारों, स्वच आदि की जांच करें। यदि ये क्षतिग्रस्त हैं तो इनके ठीक होने तक न तो इन्हें छुएं और न ही इन्हें ऑन करें।
- गैस स्टोव आदि का नॉब बन्द किये रहें।
- यदि आवश्यक हो तभी दरवाजा और आलमारी खोलें, क्योंकि उसमें रखे सामान गिर सकते हैं।
- पीने के पानी और खाद्य पदार्थों को सुरक्षित स्थानों पर रखें ताकि आसानी से प्राप्त कर सकें।





# शीतलहर

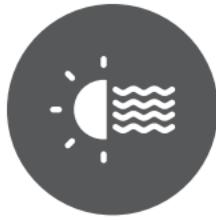
**पूर्व तैयारी** [Preparedness]

- शीतलहर पड़ने की स्थिति में अलाव जलाने हेतु लकड़ी की व्यवस्था पूर्व में सुनिश्चित कर लें।
- खेत में पर्याप्त नमी बनाये रखें, जिससे फसलों पर पाला का असर कम से कम हो सके।
- स्वयं एवं अपने परिवार के पास पर्याप्त मात्रा में गर्म कपड़ों की व्यवस्था सुनिश्चित कर लें।

**प्रत्यक्षता** [Response]

- समाचार पत्र/रेडियो/टेलीवीजन के माध्यम से मौसम की जानकारी प्राप्त करते रहें।
- नर्सरी/पौध तैयार करते समय शीतलहर या पाला से बचाव हेतु रात के समय खेत में धुंआ करना सुनिश्चित करें।
- फूल—फल बनने की अवस्था में खेतों में हल्की सिंचाई करें। इससे पाला से बचाव होता है और फूल झड़ने नहीं पाते हैं।
- फूल—फल बनने की अवस्था में भी शीतलहर/पाला से बचाव हेतु रात के समय खेत में धुंआं करना सुनिश्चित करें।
- पौधों के ऊपर पर्णीय छिड़काव सुनिश्चित करें।
- यदि फसल कटाई की अवस्था में हो और शीतलहर या पाला पड़ने की संभावना हो तो कटाई या फल की तुड़ाई तत्काल सुनिश्चित करें।

- बहुत आवश्यक होने पर ही घर से बाहर जायें। बच्चे और वृद्ध यथासंभव घर के अन्दर ही रहें।
- यदि घर से बाहर जाना आवश्यक हो तो पर्याप्त मात्रा में उनी एवं गर्म कपड़े पहन कर ही घर से बाहर निकलें। बाहर निकलते समय अपने सिर, चेहरे, हाथ एवं पैरों को गर्म कपड़ों से ढंक लें।
- शरीर को गर्मी देने के लिए पौष्टिक आहार एवं गर्म पेय पदार्थों का सेवन करें।
- बन्द कमरे में जलती हुई लालटेन, दीया एवं कोयले की अंगीठी का प्रयोग करते समय धुएं के निकास का उचित प्रबन्ध करें। प्रयोग के बाद आग को अच्छी तरह से बुझा दें।
- अलाव का उपयोग करें।
- राज्य सरकार द्वारा शहरी क्षेत्रों में बेघरों के लिए रैन-बसेरों की व्यवस्था की जाती है, जहाँ कम्बल / बिस्तर आदि उपलब्ध रहते हैं। शीतलहर के दौरान इन सुविधाओं का उपयोग करें।
- उच्च रक्तचाप एवं मधुमेह के मरीज तथा हृदय रोगी चिकित्सक से सलाह अवश्य लेते रहें एवं सामान्यतः धूप होने पर ही बाहर निकलें।
- विशेष परिस्थिति में नजदीकी सरकारी अस्पताल से अविलम्ब परामर्श लें।
- जानवरों को शीतलहर से बचाने के लिए छायादार स्थान पर बांधें तथा जूट की बोरी आदि जानवरों को उढ़ा दें।



# लू लगाना

## पूर्व तैयारी (Preparedness)

- जितनी बार हो सके, पानी पीयें, बार—बार पानी पीयें। सफर में अपने साथ पीने का पानी हमेशा रखें।
- जब भी बाहर धूप में जायें, यथासंभव हल्के रंग के, ढीले—ढाले एवं सूती कपड़े पहनें। धूप के चश्मे का प्रयोग करें। गमछे या टोपी से अपने सिर को हमेशा ढंके रहें एवं हमेशा जूता या चप्पल पहनें।
- हल्का भोजन करें व अधिक पानी की मात्रा वाले मौसमी फल—जैसे— तरबूज, खीरा, ककड़ी, खरबूजा, संतरा आदि का अधिकाधिक सेवन करें।
- घर में बने पेय पदार्थ, जैसे— लस्सी, नमक—चीनी का घोल, छाठ, नीबू—पानी, आम का पना इत्यादि का नियमित सेवन करें।
- अपने दैनिक भोजन में कच्चा प्याज, सत्तू पुदीना, सौंफ तथा खस को शामिल करें।
- चाय, कॉफी जैसे गर्म पेय पदार्थ तथा जर्दा, तम्बाकू आदि मादक पदार्थों का सेवन कम से कम करें अथवा न करें।
- शरीर के तापमान को बढ़ाने वाले ज्यादा प्रोटीन युक्त भोजन जैसे— मांस, अण्डा व सूखे मेवे आदि का सेवन या तो न करें या बहुत कम करें।
- स्थानीय मौसम के पूर्वानुमान एवं आगामी तापमान के परिवर्तन के बारे में विश्वसनीय स्रोतों से निरन्तर जानकारियां लेते रहें।

## प्रत्यक्षार्थ [Response]



- स्वास्थ्य विभाग द्वारा समय—समय पर जारी एडवायजरी के आधार पर गर्म हवाओं/लू से बचाव के लिए उचित सावधानियों को अपनायें।
- अधिक तापमान में बहुत अधिक शारीरिक श्रम न करें।
- बच्चों को बन्द वाहनों में अकेला न छोड़ें।
- रात में घर में ताजी और ठण्डी हवा आने की व्यवस्था रखें।
- जानवरों को छांव में रखें एवं उन्हें भी खूब पानी पीने के लिए दें।

- तबीयत ठीक न लगे या चक्कर आये तो तुरन्त डॉक्टर से सम्पर्क करें।
- लू लगने पर छांव में लेट जायें और अगर शरीर पर चुस्त कपड़े हों तो उन्हें ढीला कर दें अथवा हटा दें।
- लू लगने पर शरीर को ठण्डे गीले कपड़े से पोछें या ठण्डे पानी से नहायें।
- शरीर के तापमान को कम करने के लिए कूलर, पंखा आदि का प्रयोग करें।
- गर्दन, पेट एवं सिर पर बार—बार गीला तथा ठण्डा कपड़ा रखें।
- ओ0आर0एस0/नीबू—पानी, नमक—चीनी का घोल, छाँच या शर्बत पीयें ताकि शरीर में पानी की मात्रा बढ़ सके।
- लू के कारण उल्टियां आने लगे या बेहोशी आ जाये तो कुछ भी न खायें—पीयें।
- यदि एक घण्टे के अन्दर हालत में सुधार न आये तो तुरन्त नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र पर सम्पर्क करें।





# वज्रपात

## पूर्व तैयारी [Preparedness]

## प्रत्यक्षा [Response]

- स्थानीय रेडियो, संचार के अन्य माध्यमों से मौसम की जानकारी प्राप्त करते रहें और उसी के अनुरूप अपने कार्य व्यवहार को तय करें।
  
  
  
  
  
  
  
  
  
- यदि खुले में हों तो जल्द से जल्द किसी पक्के मकान में शरण लें।
- सफर के दौरान अपने वाहन में ही बने रहें।
- खिड़कियां, दरवाजे, बरामदे एवं छत से दूर रहें।
- बिजली की सुचालक वस्तुओं जैसे— लोहा आदि से दूर रहें।
- बिजली के उपकरणों या तार को छूने से बचें व उपकरणों को बिजली के सम्पर्क से हटा दें।
- तालाब व जलाशयों से भी दूरी बना लें।
- समूह में न खड़े हो, वरन् अलग-अलग खड़े हों।
- यदि जंगल में हैं तो छोटे एवं घने पेड़ों के नीचे चले जायें।

- यदि घर में हों तो पानी का नल, फिज, टेलीफोन आदि को न छुएं।
- बाहर रहने पर बाइक, बिजली या टेलीफोन का खम्भा, तार की बाड़, मशीन आदि से दूर रहें।
- धातु से बने कृषि यंत्र, लोहे का डण्डा आदि से अपने को दूर कर दें।
- यदि खेत-खलिहान में काम कर रहे हैं और किसी सुरक्षित स्थान पर शरण न ले पाये हों तो—
  - ➔ जहाँ हैं, वहीं रहें, हो सके तो पैरों के नीचे सूखी चीजों जैसे— लकड़ी, प्लास्टिक, बोरा या सूखे पत्ते रख लें।
  - ➔ दोनों पैरों को आपस में सटा लें एवं दोनों हाथों को घुटनों पर रख कर अपने सिर को जमीन की तरफ झुका लें पर सिर को जमीन से न सटायें।
  - ➔ जमीन पर बिलकुल भी न लेटें।

- आसमानी बिजली के झटके से घायल होने पर पीड़ित व्यक्ति को तत्काल नजदीकी प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र ले जाने की व्यवस्था करें।



# सुरक्षित छठ पूजा/भगदड

**पर्व तैयारी (Preparedness)**

- प्रशासन द्वारा दिये जाने वाले निर्देशों का पालन करें।
- छठ पूजा सुरक्षित व शान्तिप्रिय ढंग से सम्पन्न कराने के लिए जारी किये गये हेल्पलाइन नं० व अधिकृत पदाधिकारियों एवं स्वयंसेवकों की जानकारी प्राप्त करें।
- महिलाओं/बुजुर्गों के पास अपने घर का पता और फोन नम्बर अवश्य रखना सुनिश्चित करें।
- छठ पर्व के लिए घाटों की सफाई का विशेष ध्यान रखें।
- यदि आप छोटे बच्चों को लेकर छठ पर्व में घाटों पर लेकर जा रहे हैं तो उनके जेब में या गले में लॉकेट की तरह घर का पता एवं फोन नम्बर अवश्य रख दें।

**प्रत्यक्ष्य (Response)**

- निर्धारित मार्गों पर ही चलें और गाड़ियां निर्धारित स्थान पर ही पार्क करें।
- अफवाहें न फैलाएं और न ही उन पर विश्वास करें।
- बैरिकेडिंग को न पार करें और खतरनाक घाटों की ओर या गहरे पानी की ओर न जायें।
- छठ पूजा क्षेत्र में कहीं भी आतिशबाजी न करें।
- किसी भी प्रकार की गन्दगी न फैलायें।



## प्रतिपाद्धी (Recovery)

- किसी प्रकार की समस्या होने पर अधिकृत पदाधिकारियों/स्वयं सेवकों से ही सम्पर्क करें।
- अगर आवश्यक हो तो प्रशासन द्वारा जारी हेल्पलाइन नं० पर फोन करके बात करें।

- छठ पूजा के बाद घाटों की साफ—सफाई करें ताकि गन्दगी से कोई बीमारी आदि फैलने की आशंका न रहे।
- यदि भगदड़ की स्थिति उत्पन्न हो गयी हो तो घायलों को निकट के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तक पहुँचाने व प्राथमिक उपचार की व्यवस्था सुनिश्चित करें।



## संलग्नक १

बहु आपदाओं से बचाव हेतु चेकलिस्ट

क्रमांक	की जाने वाली गतिविधियां	कार्य सम्पादन की स्थिति हां नहीं
<b>बाढ़</b>		
1	बरसात के दिनों में छिड़काव करने हेतु ब्लीचिंग पाउडर की व्यवस्था	
2	घरेलू दवाओं जैसे— ओआरएस० पैकेट, सर्दी खांसी, बुखार की दवाओं की व्यवस्था	
3	क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले आँगनवाड़ी केन्द्रों की पहचान	
4	गाँव के निकट स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों की पहचान	
5	स्वास्थ्य केन्द्रों तक पहुँचने हेतु वैकल्पिक मार्गों की पहचान	
6	गर्भवती, धात्री महिलाओं व ५ वर्ष तक के बच्चों का आँगनवाड़ी केन्द्र पर नामांकन	
7	बच्चों की पाठ्य सामग्री को सुरक्षित करना।	
8	बाढ़ पूर्व हैण्डपम्प का उच्चीकरण	
9	६ फीट से अधिक जल—जमाव वाले क्षेत्रों की पहचान	
10	तेज बहाव वाले क्षेत्रों की पहचान	
11	षरण स्थल हेतु ऐसे ऊँचे स्थल को चयनित किया जाना	
12	स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार फसलों एवं प्रजातियों का चयन	
13	बिहार सरकार द्वारा किसानों के लिए चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के साथ जुड़ाव	
14	कृषि मेला, कृषि गोष्ठी एवं अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भागीदारी	

- 15 बाढ़ पूर्व पशुओं का टीकाकरण
- 16 ऊँचे स्थानों पर खाद्यान्न एवं पशु चारा का भण्डारण
- 17 महत्वपूर्ण दस्तावेजों को सुरक्षित करना
- 18 सूखा भोजन जैसे— चना, लईया, गुड़ सत्तू, नमक आदि की व्यवस्था
- 19 आपदा प्रबन्धन हेतु विभिन्न विषयों पर चलाये जाने वाले प्रशिक्षण में भागीदारी
- 20 सुरक्षित स्थानों तक पहुँचने के वैकल्पिक मार्गों की पहचान
- 21 आपदा की स्थिति में गाँव से निकासी व आवागमन हेतु नाव की व्यवस्था
- 22 आपदा की स्थिति में सम्पर्क करने हेतु महत्वपूर्ण केन्द्रों के नम्बर एकत्र करना

## सुखाड़

- 1 पारम्परिक जलस्रोतों – तालाब आदि की साफ—सफाई व गहरीकरण
- 2 खराब हैण्डपम्पों की पहचान व मरम्मति
- 3 खेती में सूखा सहनशील प्रजातियों व गतिविधियों को अपनाना
- 4 समुदाय स्तर पर अनाज, बीज एवं चारा बैंक की स्थापना
- 5 पशुओं एवं मानव के लिए जलस्रोतों सहित शरणस्थली की पहचान
- 6 कम पानी चाहने वाले वृक्षों का रोपण

## अगलगी

- 1 पंचायत स्तर पर उपलब्ध डीजल इंजनों की पहचान
- 2 डीजल इंजन की स्थिति की जाँच
- 3 आवश्यकता पड़ने पर आग बुझाने हेतु पानी लेने के लिए जलस्रोतों की पहचान
- 4 “क्या करें” व “क्या न करें” के उपर जानकारी

- 5 अगलगी की स्थिति में सुरक्षित निकासी हेतु वैकल्पिक मार्गों की पहचान
- 6 गैस सिलेण्डर एवं रेग्यूलेटर की समय-समय पर जाँच
- 7 आपातकालीन सेवा हेतु अग्निशमन टोल फ्री नं० की जानकारी
- 8 अगलगी पर पूर्वाभ्यासों में बच्चों एवं अपनी सहभागिता
- 9 उच्च गुणवत्ता वाले तारों व स्विचों का प्रयोग
- 10 खलिहान में पानी की व्यवस्था
- 11 खेत में फसल अपशिष्टों को जलाना

## **भूकम्प**

- 1 भूकम्प आने के दौरान बचने के लिए राज्य सरकार द्वारा जारी “क्या करें” व क्या न करें पर जानकारी
- 2 आस-पास के चिकित्सा केन्द्रों, अग्निशमन केन्द्रों एवं पुलिस चौकियों आदि के बार में जानकारी
- 3 शरण लेने हेतु सुरक्षित आश्रय स्थल की पहचान

## **शीतलहर**

- 1 अलाव जलाने हेतु सुखी लकड़ियों की व्यवस्था
- 2 खेत में पर्याप्त नमी
- 3 परिवार के सभी सदस्यों के पास गर्म कपड़े की उपलब्धता

## **लू लगना**

- 1 लू लगने के दौरान ‘क्या करें’ व ‘क्या न करें’ पर जानकारी

- 2 आवश्यकता पड़ने पर इलाज हेतु निकट के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की पहचान

### सुरक्षित छठ पूजा / भगदड़

- 1 महिलाओं एवं छोटे बच्चों को अपने घर, गाँव का पता एवं फोन नं० आदि की जानकारी
- 2 “क्या करें” व “क्या न करें” पर जानकारी

